

डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 16, उदारवाद के प्रति प्रतिक्रिया

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह सत्र संख्या 16 है, उदारवाद के प्रति प्रतिक्रिया।

चलो बस खुद को याद दिलाते हैं कि हम कहाँ थे। मुझे उम्मीद है कि आपने अच्छा ब्रेक लिया होगा। हम यहाँ हैं। क्या यह सेमेस्टर का दूसरा भाग लग रहा है? ऐसा लगता है कि पहला भाग बहुत तेज़ी से बीत गया।

वैसे भी, मेरे साथ ऐसा हुआ। लेकिन वैसे भी, अब हम पेंडुलम को फिर से वापस झूलते हुए देख रहे हैं, 19वीं सदी, 18वीं, 19वीं सदी की इंजील ताकत की थोड़ी सी प्रतिक्रिया। हमने तीन महत्वपूर्ण इंजील पुनरुत्थान आंदोलनों के बारे में भी बात की।

अब हमें इस पर थोड़ा सा विरोध मिल रहा है। और हम उदार धर्मशास्त्र के बारे में बात कर रहे हैं। अब, जब हमारे पास जी.ई. दिवस था, तो मैं उदार धर्मशास्त्र के बारे में बात करना नहीं चाहता था, लेकिन यह ऐसा ही था।

तो, मुझे उम्मीद है कि वे समझ गए होंगे कि मैं सिर्फ उदार धर्मशास्त्र की व्याख्या कर रहा था। मैं इसे गॉर्डन कॉलेज या किसी और चीज़ से नहीं जोड़ रहा था, लेकिन मुझे उम्मीद है कि वे इसे समझ गए होंगे। आइए प्रार्थना करें कि ऐसा ही हो।

इसलिए, हमने पृष्ठभूमि दी, और फिर हमने उदारवाद के कुछ बुनियादी धार्मिक निष्कर्ष दिए। और आखिरी बात जो हमने कही, अगर मैं इस पर सही हूँ, तो आखिरी बात जो हमने कही वह यह थी कि, विडंबना यह है कि उदारवाद ने ईसाई धर्म के दाएं और बाएं दोनों को प्रभावित किया। ईसाई अनुभव के संदर्भ में इसका दाएं पर प्रभाव पड़ा, और निश्चित रूप से, सुसमाचार प्रचार और पुनरुत्थानवाद, और प्रोटेस्टेंटवाद, शायद सामान्य रूप से, मसीह और आस्तिक के व्यक्तिगत धार्मिक अनुभव पर जोर देता है, और इसी तरह।

उस प्रभाव का एक हिस्सा शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद था। अब, यह एक ऐसा संबंध है जिसे बहुत से लोग कभी नहीं समझ पाएंगे। निश्चित रूप से, इंजील परंपरा या अधिक कट्टरपंथी परंपरा में लोग कभी नहीं सोचेंगे कि अनुभव पर उनके जोर का कारण शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद से आता है।

वे कभी भी उस संबंध को नहीं जोड़ पाएंगे। बाईं ओर, इसने रौशनबुश के माध्यम से सामाजिक सुसमाचार आंदोलन के साथ संबंध बनाया। और हमने श्लेयरमाकर के बारे में बात की, लेकिन हमने वाल्टर रौशनबुश का भी उल्लेख किया।

तो, बाईं ओर, सामाजिक सुसमाचार आंदोलन, लेकिन हमने कहा, हम इसे ध्यान से नोट करने की कोशिश कर रहे हैं। रौशनबुश की सबसे हालिया जीवनी रौशनबुश को एक इंजीलवादी के रूप में पहचानती है क्योंकि, ऐतिहासिक रूप से, इंजीलवादी गरीबों के लिए चिंतित रहे हैं। वे बहिष्कृत, असहाय, बेघर, हाशिए पर पड़े लोगों और निश्चित रूप से सामाजिक सुसमाचार आंदोलन के लिए चिंतित हैं।

और वाल्टर रौशनबुश खुद इस बारे में चिंतित थे। इसलिए हम यह नहीं कहेंगे, जब हम कहते हैं कि इसने वामपंथियों को प्रभावित किया, तो हम यह नहीं कहेंगे कि यह जरूरी नहीं कि बुरा हो। सुसमाचार के सामाजिक पहलू के प्रति अपनी चिंता के कारण इसका वामपंथियों पर प्रभाव पड़ा।

लेकिन फिर भी, बहुत से लोग सामाजिक सुसमाचार और उदारवाद के बीच उन संबंधों को नहीं समझते हैं। इसलिए उदारवाद दोनों तरह से काम करता है। अब, आइए उदारवाद के मूल्यांकन, कुछ ताकतों और शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद के मूल्यांकन, कुछ कमजोरियों को देखें।

तो, आइए श्लेयरमाकर द्वारा शुरू किए गए आंदोलन पर नज़र डालें। और वैसे, मैंने यह भी ज़ोर देने की कोशिश की कि श्लेयरमाकर कितने महत्वपूर्ण हैं। मुझे उम्मीद है कि मैं आपको यह बात समझा पाया हूँ।

वह एक आलोचनात्मक व्यक्ति थे क्योंकि उन्होंने प्रोटेस्टेंट सोच, प्रोटेस्टेंट सिद्धांत आदि को नया रूप दिया और उन पर पुनर्विचार किया तथा अनुभव पर जोर दिया। इसलिए, मैं एक बहुत ही आलोचनात्मक व्यक्ति हूँ। ठीक है, कुछ बुनियादी... ओह, क्या हम... नहीं, हम बुनियादी धार्मिक निष्कर्षों तक नहीं पहुँच पाए।

हम बी तक नहीं पहुँच पाए। मुझे खेद है। हम बी तक नहीं पहुँच पाए, और फिर हम सी और डी पर पहुँचेंगे। तो चलिए मैं पहले बी पर पहुँचता हूँ, शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद के कुछ बुनियादी धार्मिक निष्कर्ष। तो, ठीक है।

सबसे पहले, शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद आदर्शवाद का एक रूप था। यह एक तरह का विश्वास था कि सभी वास्तविकताएँ ईश्वरीय मन द्वारा आकार लेती हैं। इसलिए, शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद के लिए एक आदर्शवादी प्रकार का धार्मिक केंद्र था।

और इस तरह के आदर्शवाद के कारण, शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद ने ईश्वर और मानव के बीच एक वास्तविक निरंतरता देखी, न कि ईश्वर और मानव के बीच एक विराम। वे ईश्वर और मानव के बीच एक निरंतरता देखते हैं। और ईश्वर और मानव के बीच इस निरंतरता को, उन्होंने एक अच्छी चीज़ के रूप में देखा।

अब, हम बाद में कुछ ताकतों और कुछ कमजोरियों के बारे में बात करने जा रहे हैं, लेकिन वे इसे एक अच्छी बात मानते हैं। दरअसल, श्लेयरमाकर और रौशनबुश जैसे लोगों का अनुसरण करने वाले कुछ शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवादियों ने कहा कि ईश्वर और मानव के बीच निरंतरता के कारण, हम अपने युग के भौतिकवाद के खिलाफ बोल रहे हैं। हम अपने युग के लालच के

खिलाफ़ बोल रहे हैं, जहाँ मानव जीवन ईश्वर के साथ संबंध में स्वयं की समझ के बजाय स्वयं के इर्द-गिर्द घूमता है।

इसलिए, ये लोग ईश्वरीय और मानवीय संबंधों में इस तरह की निरंतरता देखना चाहते थे, न कि किसी रुकावट को। इसलिए, हमें इन लोगों के बुनियादी धार्मिक निष्कर्ष पर भी ध्यान देना चाहिए; वे भविष्य के बारे में बहुत आशावादी थे। ये लोग, और हम एक मिनट में कुछ ताकत और कमजोरियाँ देखने जा रहे हैं, कि यह कैसे हुआ, लेकिन वे भविष्य के बारे में बहुत आशावादी थे।

उन्होंने इस दुनिया को अंततः एक बहुत ही तर्कसंगत दुनिया के रूप में सोचा जो दिव्य चिंताओं और एक तर्कसंगत दिमाग से प्रेरित और प्रेरित थी। अब, मैं बस यह पता लगाने की कोशिश कर रहा हूँ कि चीजें धार्मिक रूप से कैसे काम करती हैं, श्लेयरमेकर से शुरू करते हुए। जब हम एक तर्कसंगत दुनिया कहते हैं, तो हम इसे दूसरी तरफ से देख रहे होते हैं।

हम इसे 21वीं सदी के परिप्रेक्ष्य से देख रहे हैं। हम यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि 19वीं सदी और 20वीं सदी की शुरुआत में श्लेयरमाकर के साथ यह कैसे काम करता था। इसलिए वे बहुत आशावादी थे।

इसमें कोई संदेह नहीं है। इसलिए, वे ईश्वर की निकटता पर जोर देते थे। ईश्वर आसन्न है।

वह हमारे साथ है। वह हमारे बीच में है। ईश्वर की श्रेष्ठता पर जोर देने के बजाय, ईश्वर पवित्र दूसरा है।

शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवादियों के लिए, उनका जोर इस बात पर था कि ईश्वर यहाँ है। अब, जब वे ईश्वर के यहाँ होने, ईश्वर के हमारे बीच होने, ईश्वर के हमारे साथ होने की बात करते हैं, तो उनका मतलब दो तरह से होता है। सबसे पहले, उनका मतलब प्राकृतिक दुनिया के संदर्भ में था।

इसलिए, उन्होंने ईश्वर को ईश्वर की रचना के माध्यम से, प्राकृतिक दुनिया के माध्यम से, और इसलिए प्रकृति के माध्यम से देखा। हालाँकि, दूसरा तरीका समाज और सामाजिक समूहों के कामकाज के माध्यम से था। जब समाज मानव जाति की बेहतरी के लिए काम कर रहा था, तो उन्होंने इसे एक तरह के दिव्य आसन्न ईश्वर के रूप में देखा जो समाज के माध्यम से काम कर रहा था ताकि वह मूल रूप से जो कुछ भी बनाया था उसे बेहतर बना सके।

तो, ईश्वर की निकटता। ईश्वर हमारी दुनिया में, प्रकृति में, समाज में, इत्यादि में प्रवेश कर रहा है। धर्मशास्त्रीय निष्कर्ष की एक और बात यह है कि उन्होंने ईश्वर के प्राकृतिक नियम, प्राकृतिक धर्मशास्त्र पर बहुत जोर दिया।

तो प्राकृतिक धर्मशास्त्र एक तरह से ईश्वर का अपने उद्देश्यों को प्राकृतिक दुनिया के माध्यम से, हमारे जीवन के माध्यम से, एक तरह से कार्यान्वित करना है। उन्होंने प्राकृतिक कानून को एक ऐसे कानून के रूप में देखा जिसका पालन किया जाना चाहिए, और उन्होंने सोचा कि यह कानून एक बहुत ही प्रगतिशील कानून था। हम एक बहुत अच्छे समय में आगे बढ़ने जा रहे थे।

एक तरह से इन लोगों के लिए अच्छा समय आने वाला है। इसलिए, वे भविष्य के बारे में फिर से बहुत आशावादी थे। इसलिए, एक और धार्मिक निष्कर्ष यह है कि उन्होंने मूल पाप के सिद्धांत को नकार दिया।

वे मूल पाप के सिद्धांत को नहीं समझते थे। वे बहुत तर्कवादी और बहुत आशावादी थे, और वे ईश्वर और मानव जाति के रिश्ते के बारे में बहुत आशावादी थे, इसलिए वे किसी भी तरह के मूल पाप पर विश्वास नहीं करते थे। बेशक, वे पापपूर्ण कार्यों में विश्वास करते थे।

मेरा मतलब है, आप बस इधर-उधर नहीं देख सकते, और आपको पापपूर्ण कार्य दिखाई देंगे। लेकिन मूल पाप, एक पापी प्रकृति, जिसने पूरी मानवता को हिला दिया है, पूरी मानवता को ईश्वर से अलग कर दिया है, वे इसे नहीं देखते हैं। वे इसे स्वीकार नहीं करते हैं।

इसलिए, मूल पाप उनके लिए एक तरह से बाहर है। और फिर, अंत में, इन लोगों के लिए जो केंद्रीय हो जाता है वह है नैतिकता। किसी भी धर्म, जिसमें ईसाई धर्म भी शामिल है, का सच्चा चिह्न यह है कि क्या आप नैतिक जीवन जी रहे हैं। क्या आप नैतिक जीवन जी रहे हैं? इसलिए, नैतिकता केंद्रीय हो जाती है।

जहाँ तक इन लोगों का सवाल है, धर्मशास्त्र और सिद्धांत परिधीय हो गए हैं। इसलिए, नैतिकता मामले का दिल बन जाती है और वह मामला बन जाता है जिसके द्वारा आप ईसाई धर्म और अन्य सभी धर्मों का मूल्यांकन करते हैं। इसलिए, यहाँ एक बहुत ही नैतिक आदेश है।

तो, उदारवाद के कुछ बुनियादी धार्मिक निष्कर्ष हैं, और ये लोग अपनी किताबों में उन्हें बहुत गंभीरता से बता रहे हैं। श्लेयरमाकर जैसे लोग संस्कृति के प्रति भाषणों पर अपनी किताब में धर्म का तिरस्कार करते हैं। तो अब हम उस जगह पर चलते हैं जहाँ मुझे लगा कि हम थे।

तो अब मुझे पता है कि हम कहाँ हैं। सी, उदारवाद की ताकत का मूल्यांकन, और उदारवाद की कमजोरियों का मूल्यांकन। तो, हम पहले ताकत से निपटेंगे।

अब, दुर्भाग्य से, शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद के लिए, मेरे पास ताकत से ज़्यादा कमजोरियाँ हैं। मुझे लगता है कि आंदोलन में कुछ ताकतें थीं, और निश्चित रूप से ऐसी चीज़ें थीं जो हम शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद से सीख सकते थे, लेकिन आंदोलन में कुछ कमजोरियाँ भी थीं। ठीक है, पहली ताकत।

श्लेयरमाकर को पढ़कर मैं क्या सीखता हूँ? तो, जब मैं श्लेयरमाकर को पढ़ता हूँ, तो वह मुझे क्या देता है? धर्मशास्त्र में मेरी रुचि में वह क्या योगदान देता है? तो पहली ताकत सत्य के प्रति खुलापन है। मैं श्लेयरमाकर जैसे लोगों से इसकी सराहना करता हूँ। सत्य के प्रति खुलापन है, और सत्य के प्रति वफ़ादार होना, सत्य के प्रति प्रतिबद्धता, सत्य से डरना नहीं, चाहे वह कहीं से भी आए, चाहे वह वैज्ञानिक सत्य हो, दार्शनिक सत्य हो, या गणितीय सत्य हो, उससे डरना नहीं, बल्कि उसे गले लगाना क्योंकि ईश्वर सभी सत्यों का रचयिता है।

इसलिए मुझे लगता है कि शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद इस मामले में काफी अच्छा है। मेरा मतलब है, श्लेयरमाकर जैसे लोगों से शुरुआत करना। इसलिए, हमें ऐसा करना चाहिए। यही एक ताकत है।

एक और ताकत जिसे मैं असली ताकत मानता हूँ, वह है भीतर से आलोचना करने की इच्छा। शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद आत्म-आलोचनात्मक होने के लिए तैयार था। हम कहाँ सही हैं? हम कहाँ गलत हैं? आइए हम भीतर से आलोचनात्मक बनें।

आइए हम खुले रहें। आइए हम ईमानदार रहें। आइए हम जो सच मानते हैं उसके बारे में पारदर्शी रहें, और आइए उन चीजों पर काम करें।

तो, यह एक तरह की आत्म-आलोचना है, और मेरे हिसाब से, आत्म-आलोचना करना एक गुण है। शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद की तीसरी ताकत, और यह, मैं यहाँ रौशनबुश की तस्वीर को ही रखूँगा, लेकिन तीसरी ताकत एक बहुत ही प्रतिबद्ध सामाजिक चिंता है जो आंदोलन में, सामान्य रूप से, थी, गरीबों के लिए चिंता, बहिष्कृत लोगों के लिए चिंता, असहाय, बेघर, जीवन में हाशिए पर पड़े लोगों के लिए चिंता। और वाल्टर रौशनबुश और उनके आंदोलन, सामाजिक सुसमाचार आंदोलन से बेहतर कोई भी इसका उदाहरण नहीं दे सकता।

लेकिन जैसा कि मैंने अभी कहा, वाल्टर रौशनबुश कुछ हद तक इंजीलवादी भी हैं। इसलिए, वाल्टर रौशनबुश ऐसे व्यक्ति नहीं थे जो सुसमाचार के व्यक्तिगत पहलुओं, व्यक्तिगत रूपांतरण, व्यक्ति के साथ पवित्र आत्मा की सेवकाई, इत्यादि को बाहर फेंक देते थे। लेकिन वे ईश्वर के राज्य के तरीके के अनुसार सामाजिक निर्माण के लिए बहुत चिंतित थे। इसलिए, मैं इसकी सराहना करता हूँ। इसलिए,

उदारवाद की बहुत सारी ताकतें थीं, लेकिन मुझे लगता है, इसमें बहुत बड़ी कमज़ोरियाँ भी थीं जो वास्तव में आंदोलन में आ गईं। और आप उन कमज़ोरियों को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते।

और आज भी, शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवादियों के बीच, मुझे लगता है कि उन्हें इन कमज़ोरियों का सामना करना पड़ता है। तो, ठीक है। तो मुझे ऐसा करने के लिए कुछ समय चाहिए।

लेकिन सबसे पहले, मैं कहूँगा कि शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद, सामान्य रूप से, अब ईश्वर के बारे में बाइबिल का दृष्टिकोण नहीं रखता था। मुझे लगता है कि ईश्वर और मानव के बीच के रिश्ते की उनकी समझ के साथ, उन्होंने ईश्वर को हमारे स्तर पर ला दिया। इसलिए, वे ईश्वर के बारे में बाइबिल के दृष्टिकोण को अपनाने में सक्षम नहीं थे।

और इससे मेरा मतलब है कि वह प्रभु, ब्रह्मांड का पालनहार है। वह प्राकृतिक नियमों के अनुसार काम करता है, लेकिन वह कभी-कभी चमत्कार के अनुसार भी काम करता है। इसलिए मुझे नहीं लगता कि उनके पास परमेश्वर के बारे में एक अच्छा, ठोस बाइबिल दृष्टिकोण, परमेश्वर के बारे में एक समग्र बाइबिल दृष्टिकोण था।

उन्होंने सिर्फ ईश्वर की निकटता पर ज़ोर दिया। वे ईश्वर की उत्कृष्टता, ईश्वर की महानता, ईश्वर की महिमा को भूल गए। वह जो है, उसके कारण हमारी पूजा के योग्य है, इत्यादि।

तो यह पहली बात है। मुझे लगता है कि ईश्वर के बारे में बाइबल आधारित दृष्टिकोण में आम तौर पर कमी है। अब, मैं रौशनबुश जैसे लोगों के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ, लेकिन आम तौर पर, शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवादियों के बीच, मैं कहूँगा कि यह सच है। ठीक है, नंबर दो, आप इससे हैरान नहीं होंगे, लेकिन उनके पास मसीह के बारे में बाइबल आधारित दृष्टिकोण की कमी थी क्योंकि, उनके लिए, मसीह एक आदर्श, एक उदाहरण, हमारा नैतिक उदाहरण, हमारा नैतिक प्रभावक, एक नैतिक व्यक्ति बन जाता है।

खैर, मसीह वही थे, लेकिन वे ईश्वर भी थे। वे देहधारी ईश्वर भी थे। इसलिए, उन्होंने उनकी मानवता पर ज़ोर दिया, लेकिन उनकी दिव्यता की उपेक्षा की।

और अगर आप मसीह के प्रति सच्चे हैं, तो आपको दोनों को स्वीकार करना होगा। वह पूरी तरह से ईश्वर और पूरी तरह से मनुष्य था, लेकिन पूरी तरह से मनुष्य और पूरी तरह से ईश्वर भी था। इसलिए, उनके लेखन से, उनके कार्यों से, वे इस बात से इनकार करते हैं कि वह पूरी तरह से ईश्वर था क्योंकि उनमें से बहुत से लोग मानते थे कि वह मरियम और जोसेफ में पैदा हुआ था।

वह इस दुनिया में एक अच्छे नैतिक व्यक्ति, एक अच्छे नैतिक व्यक्ति के रूप में आए, और यह केवल उनकी नैतिकता है जिसे हम अपनाना चाहते हैं, उदाहरण के लिए, माउंट पर उपदेश। इसलिए मैं कहूँगा कि कुछ लोग अभी भी शायद उन्हें पूरी तरह से भगवान के रूप में स्वीकार करते हैं, लेकिन पूरे आंदोलन ने निश्चित रूप से मसीह और अवतार और क्रूस पर मोक्ष और उसके साथ जुड़ी हर चीज को पूर्ण दिव्यता से वंचित कर दिया। ठीक है, नंबर तीन।

मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है। खैर, मुझे लगता है कि ये सभी महत्वपूर्ण हैं। मुझे लगता है कि जब हम शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद के बारे में सोचते हैं तो हमें इन चीज़ों के बारे में सोचना चाहिए।

लेकिन तीसरी बात महत्वपूर्ण है लेकिन विडंबनापूर्ण है। तीसरी बात यह है कि शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद ने खुद को उस संस्कृति के बंधन में पाया जिसमें वे काम करते थे। और जिस कारण से वे खुद को संस्कृति के बंधन में पाते हैं वह यह है कि जब वे संस्कृति से बात करना चाहते थे, तो वे अक्सर संस्कृति से भविष्यवाणी के तरीके से बात नहीं करते थे।

जबकि वे संस्कृति को संबोधित करना चाहते थे, वे अक्सर इसे भविष्यवाणी के तरीके से नहीं करते थे। वे अक्सर संस्कृति से जुड़ जाते थे। वे अक्सर संस्कृति में डूब जाते थे।

और संस्कृति के बारे में लगभग एक गैर-आलोचनात्मक दृष्टिकोण है और संस्कृति से ऊपर खड़े होने की क्षमता की कमी है, संस्कृति के बारे में लगभग एक गैर-आलोचनात्मक दृष्टिकोण है, संस्कृति द्वारा कही गई हर बात को लगभग स्वीकार करना। और मैं इसके दो उदाहरण देना चाहता हूँ। हमने हरमन व्याख्यान कब दिए थे? मुझे लगता है कि दो हफ्ते पहले, शायद, जब ओवेन गिंगरिच यहाँ थे और उन्होंने इस पर एक शानदार काम किया था।

लेकिन एक तरह से विज्ञान के बारे में एक तरह का गैर-आलोचनात्मक दृष्टिकोण था, विज्ञान द्वारा कही गई और सिखाई गई हर बात का बिना किसी आलोचना के स्वागत करना, पीछे खड़े होकर यह नहीं कहना कि विज्ञान कहाँ सही है? और विज्ञान कहाँ गलत है? या विज्ञान कहाँ सही है? और धर्म कहाँ विज्ञान से बात कर सकता है? तो, यह लगभग ऐसा है जैसे उन्होंने धर्म को विज्ञान से पूरी तरह अलग कर दिया। और वे वैज्ञानिक जांच के बारे में एक तरह का भविष्यसूचक और आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखने में सक्षम नहीं थे। दूसरा स्थान, निश्चित रूप से, ऐतिहासिक जांच में है।

और वह यह है कि वे एक तरह की कट्टरपंथी बाइबिल आलोचना में फंस गए। इसलिए, जब बाइबिल आलोचना एक तरह से जंगली हो गई, तो एक तरह से, ये लोग पीछे हटने और यह कहने में सक्षम नहीं थे कि बाइबिल आलोचना क्या सत्य है। शायद यहाँ कुछ सत्य बातें हैं जिन्हें मैं अपना सकता हूँ।

लेकिन क्या बाइबिल की आलोचना में ऐसी बातें हैं जो सत्य नहीं हैं और जिन्हें चुनौती दी जानी चाहिए? और मुझे नहीं लगता कि उन्होंने इस मामले में बहुत अच्छा काम किया है। मुझे लगता है कि वे जहाँ भी गए, बाइबिल की आलोचना के बहकावे में आ गए। और अगर आप संस्कृति की इस तरह की ताकतों के बहकावे में आ गए, तो आपके पास संस्कृति का न्याय करने, संस्कृति से भविष्यवाणी करने और संस्कृति की आलोचना करने की क्षमता नहीं है।

इसलिए वे बन गए, यह विडंबना है कि वे संस्कृति के बंधन में आ गए। क्योंकि कभी-कभी यह संस्कृति ही थी जिससे वे बात करना चाहते थे, खासकर जब सामाजिक सरोकारों की बात आती थी। लेकिन वे अक्सर संस्कृति के बंधन में आ जाते थे।

वे इतने बड़े हो गए, वे संस्कृति द्वारा आकार ले लिए गए। ठीक है, यह तीसरा है। नंबर चार।

चौथा यह है कि उनके लिए हर चीज़ को अनुभव के आधार पर तौला और मापा जाना चाहिए। और मुझे लगता है कि यह समस्याजनक हो जाता है। कुछ सत्य ऐसे होते हैं जो वस्तुनिष्ठ सत्य होते हैं जिन्हें अनुभव और ईश्वर के देहधारी होने के माध्यम से तौला या मापा नहीं जाना चाहिए, उदाहरण के लिए।

मैं इसे एक वस्तुनिष्ठ सत्य के रूप में देखता हूँ जिसे मेरे अनुभव से तौला या मापा नहीं जाना चाहिए। लेकिन शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद के लिए, हर चीज़ को अनुभव की कसौटी से गुजरना पड़ता था। और याद रखें, मैं यहाँ श्लेयरमाकर की तस्वीर पर वापस जाऊँगा।

ओह। मेरा मतलब है, यहाँ सिर्फ नामों से। ओह।

शब्द *gefühl* याद रखें। *Gefühl*। याद रखें हमने कहा था कि यह अनंत पर परिमित की पूर्ण निर्भरता है।

खैर, यह अनुभव है। गेफुहल अनुभव है। इसलिए, हर चीज़ को अनुभव से ही मापा जाना चाहिए।

इन लोगों के लिए हर चीज़ अनुभव की कसौटी पर खरी उतरती है। इसलिए, अनुभव, भावना और इस तरह की चीज़ों पर ज़ोर देना समस्याजनक हो जाता है। खैर, मेरी सूची में पाँचवाँ नंबर आलोचना की कमज़ोरी का मूल्यांकन है।

और ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि पाप के बारे में उनका नज़रिया बहुत कम था और वे भविष्य को लेकर बहुत ज़्यादा आशावादी थे। इसलिए, पाप के बारे में उनका नज़रिया बहुत कम था। वे मूल पाप में विश्वास नहीं करते थे।

वे पापपूर्ण कार्यों में विश्वास करते हैं, लेकिन वे मूल पाप में विश्वास नहीं करते। और क्योंकि उनका पाप के प्रति दृष्टिकोण कम था, इसलिए उनका भविष्य के प्रति दृष्टिकोण उंचा था और वे इस बात को लेकर भी चिंतित थे कि भविष्य में मनुष्य क्या कर सकता है। ठीक है।

और इसलिए वे वास्तव में विश्वास करते थे, मुझे लगता है कि वे वास्तव में विश्वास करते थे, कि ईश्वर का राज्य मानवीय क्रियाकलापों द्वारा लाया जाएगा। ऐसा नहीं था, उन्होंने ईश्वर के राज्य को इतिहास में हस्तक्षेप के रूप में नहीं देखा, बल्कि उन्होंने ईश्वर के राज्य को ऐसी चीज़ के रूप में देखा जिसे हम अच्छी सामाजिक प्रक्रियाओं के साथ विकसित और विकसित कर सकते हैं। यह समस्याग्रस्त हो गया।

तो मैं आपको इसका एक उदाहरण देता हूँ। 20वीं सदी की शुरुआत में, एक क्लासिकल प्रोटेस्टेंट, वास्तव में, मैं आज सुबह ही, मैं इसका नवीनतम अंक देख रहा था, लेकिन 20वीं सदी की शुरुआत में, क्लासिकल प्रोटेस्टेंट उदारवाद ने एक पत्रिका शुरू की और इसे क्रिश्चियन सेंचुरी कहा गया। और इसे क्रिश्चियन सेंचुरी इसलिए कहा गया क्योंकि 20वीं सदी क्रिश्चियन सेंचुरी होने वाली थी।

और वे अभी भी इसे उसी शीर्षक के तहत प्रकाशित करते हैं। और मैंने इसे पढ़ा, लेकिन यह बहुत अजीब है कि वे अभी भी उस शीर्षक का उपयोग करते हैं, ईसाई शताब्दी, क्योंकि मुझे शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवादियों को यह बताने से नफरत है, लेकिन 20वीं शताब्दी ईसाई शताब्दी नहीं बन पाई। आपके पास प्रथम विश्व युद्ध था, आपके पास द्वितीय विश्व युद्ध था, आपके पास प्रलय था, आपके पास कोरियाई युद्ध था, वियतनाम में युद्ध था।

मेरा मतलब है, ईसाई सदी एक क्रूर और खूनी सदी साबित हुई। यह बिल्कुल भी ईसाई सदी नहीं थी। तो, यह अति आशावादी दृष्टिकोण कि हम अपनी सामाजिक प्रक्रियाओं द्वारा राज्य का निर्माण कर सकते हैं, आप उस दृष्टिकोण को कैसे बनाए रख सकते हैं जब आप 20वीं सदी में जो हुआ उसे देखते हैं? बेहतर से बेहतर होते हुए, लोगों को गैस से मारा गया; प्रथम विश्व युद्ध, द्वितीय विश्व युद्ध, सभी नरसंहार और प्रलय में सैकड़ों हज़ारों लोगों को गैस से मार दिया गया।

जब आप 20वीं सदी को वास्तविक रूप से देखते हैं तो आप ईसाई सदी के दृष्टिकोण को कैसे बनाए रख सकते हैं? तो, यह आंशिक रूप से पाप के प्रति उनके निम्न दृष्टिकोण के कारण है। तो, ठीक है, एक और तरह की आलोचना, और वह है नैतिकतावाद पर अत्यधिक जोर, एक अच्छा नैतिक व्यक्ति होना, एक अच्छा नैतिक व्यक्ति होना, क्योंकि यह उन्हें कहाँ ले गया, इसने उन्हें

कर्मों द्वारा मोक्ष की ओर ले गया। इसने उन्हें इस तरह से आगे बढ़ाया, आप बच गए क्योंकि आप एक अच्छे व्यक्ति हैं, आप अच्छे नैतिक और नैतिक काम कर रहे हैं।

तो, इस तरह की समझ के साथ, हम वापस उसी बात पर आ रहे हैं जिसके खिलाफ लूथर ने लड़ाई लड़ी थी। तो, अनुग्रह पर कम जोर दिया गया है और कार्यों पर अधिक जोर दिया गया है। और अंत में, ज़ाहिर है, रहस्योद्घाटन के बारे में कम दृष्टिकोण है।

ईश्वर ने खुद को प्रकट किया है। कैसे? खैर, सबसे पहले, उसने खुद को मसीह के माध्यम से एक व्यक्ति के रूप में प्रकट किया है, और मसीह शास्त्र के माध्यम से प्रकट होता है, लेकिन निस्संदेह, रहस्योद्घाटन के बारे में उसका दृष्टिकोण कम है। और यह हमारे अपने मानव संसाधनों के बारे में उच्च दृष्टिकोण के साथ-साथ चलता है। इसलिए अब मैं सारांश के रूप में यहाँ एक और नाम का उल्लेख करना चाहता हूँ।

और उनका नाम एच. रिचर्ड नीबहर है। और मेरे पास एच. रिचर्ड की एक तस्वीर है, और मैंने एच. रिचर्ड नीबहर के साथ फिर से तारीखें लिखी हैं, 1894 और 1962। एच. रिचर्ड नीबहर के बारे में कहानी संक्षेप में, क्योंकि हम बाद के व्याख्यान में नीबहर भाइयों के बारे में बात करेंगे।

लेकिन एच. रिचर्ड नीबहर एक महान व्यक्ति थे, आज हम उन्हें पब्लिक थियोलोजियन कहते हैं। मुझे नहीं लगता कि उस समय उन्होंने इस शब्द का इस्तेमाल किया था। मुझे लगता है कि यह एक बहुत ही नया शब्द है।

लेकिन वैसे भी, वे सार्वजनिक धर्मशास्त्री शब्द का उपयोग करते हैं। वह एक सार्वजनिक धर्मशास्त्री थे जिन्होंने येल में पढ़ाया था। इसलिए, वह चर्च के जीवन और व्यापक संस्कृति में भी एक बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति थे।

लोग एच. रिचर्ड नीबहर का नाम जानते थे। अब, यह यहाँ महत्वपूर्ण नहीं है; आपको यह जानने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन उनके भाई शायद थोड़े ज़्यादा मशहूर थे। उनके भाई का नाम रेनहोल्ड नीबहर था।

लेकिन हम दूसरे व्याख्यान में नीबूर बंधुओं के बारे में भी बात करेंगे। लेकिन एच. रिचर्ड नीबूर एक धर्मशास्त्री होने के साथ-साथ समाजशास्त्री भी हैं। और उन्होंने शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद पर भी नज़र डाली।

उन्होंने अमेरिका में ईश्वर का साम्राज्य नामक एक बहुत ही तीखी किताब भी लिखी, जो शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद के बारे में थी। अब, अमेरिका में ईश्वर के साम्राज्य में, एक वाक्य में, उन्होंने शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद के बारे में बताया। उन्होंने कहा, क्रोध रहित ईश्वर, क्योंकि देखो उनके पास एक अच्छा ईश्वर था, कोई क्रोध नहीं, मनुष्य को पाप रहित लाया, क्योंकि वे मूल पाप में विश्वास नहीं करते थे, बिना न्याय के राज्य में।

इसलिए, राज्य एक तरह की सामाजिक प्रगति थी, जिसमें राज्य पर कोई निर्णय नहीं था, बिना क्रूस के मसीह की सेवकाई के माध्यम से। मसीह के कार्य के माध्यम से, लेकिन बिना क्रूस के।

मसीह का कार्य जिस पर शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद विश्वास करता था, वह एक अच्छा इंसान, एक अच्छा नैतिक प्रभावक और एक आदर्श था कि हमें अपना जीवन कैसे जीना चाहिए।

यह अमेरिका में ईश्वर का साम्राज्य नामक पुस्तक में एक वाक्य है। लेकिन आप चाह सकते हैं कि जब आप सोच रहे हों कि क्या लिखना है तो आपके सामने ऐसे वाक्य आएँ। आप उम्मीद कर सकते हैं कि आप ऐसे वाक्य के बारे में सोच सकें।

एक वाक्य में, उन्होंने शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद की आलोचना की। क्रोध रहित ईश्वर ने बिना पाप वाले मनुष्य को बिना न्याय के राज्य में क्रूस रहित मसीह की सेवकाई के माध्यम से लाया। और यही शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद का उनका आकलन था।

उनके भाई का भी कुछ ऐसा ही अनुमान था। रेनहोल्ड नीबहर का भी कुछ ऐसा ही अनुमान था। तो, यह है।

एक तरह से शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद की कहानी यहीं समाप्त होती है। ठीक है। कहानी का अंत दिखाने के लिए, मैं अपने निजी जीवन का एक संक्षिप्त उदाहरण देना चाहता हूँ।

नहीं, मैं एक क्लासिकल प्रोटेस्टेंट उदारवादी के रूप में बड़ा नहीं हुआ और फिर धर्मांतरित हो गया। लेकिन ब्राउन यूनिवर्सिटी में एक बहुत प्रसिद्ध प्रोफेसर थे जिन्होंने कट्टरवाद और इंजीलवाद पर बहुत काम किया था। और यह कई साल पहले की बात है।

वह इंजीलवाद पर एक पेपर भी दे रहे थे। लेकिन ब्राउन में उनके पास उस पेपर का जवाब देने वाला कोई नहीं था। मेरा मतलब है, वह खुद एक उदारवादी थे।

वह केवल कट्टरवाद और इंजीलवाद में अकादमिक रूप से रुचि रखते थे। कट्टरवाद या इंजीलवाद में उनकी कोई दिली रुचि नहीं थी, लेकिन वह उस समय और उन आंदोलनों के विद्वान थे। इसलिए, वह ब्राउन में इंजीलवाद पर एक पेपर दे रहे थे।

लेकिन उन्हें पेपर पर प्रतिक्रिया देने के लिए एक इंजीलवादी की जरूरत थी। और उन्हें ब्राउन में कोई नहीं मिला। इसलिए, उन्होंने इधर-उधर देखा।

तो, उन्होंने मुझे ढूँढ़ लिया। तो, उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं जाकर पेपर पर प्रतिक्रिया दूँगा। यह एक शानदार डिनर और एक बहुत ही दिलचस्प शाम थी।

खैर, मुझे पेपर में ज़्यादा जवाब देने की ज़रूरत नहीं पड़ी क्योंकि उन्होंने अपने पेपर में कहा था कि शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद जिसे हम श्लेयरमेकर के समय से जानते हैं, अब दिवालिया हो चुका है और उन्होंने जो शब्द इस्तेमाल किया था वह था दिवालिया। यह दिवालिया हो चुका है। इसमें कुछ भी नहीं बचा है।

चलिए इसका सामना करते हैं। अब, यह बहुत दिलचस्प है क्योंकि वह कह रहे थे कि एक शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवादी के रूप में जो शायद ही कभी चर्च जाता था या यहां तक कि, आप

जानते हैं, उसे इसकी आवश्यकता नहीं दिखती थी। इसलिए, एक शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवादी के रूप में, उन्होंने ईसाई धर्म में वह जीवंतता पाई जो उन्हें इंजीलवाद में थी।

यह जीवंत है। यह जीवित है। ये लोग वास्तव में किसी चीज़ पर विश्वास करते हैं।

तो, आप जानते हैं, मुझे पेपर पर ज़्यादा प्रतिक्रिया देने की ज़रूरत नहीं थी। मैं सिर्फ़ एक इंजीलवादी के तौर पर उनकी कही बातों से सहमत था। मैंने कहा, आप सही कह रहे हैं, आप जानते हैं।

लेकिन, आप जानते हैं, दिवालिया, उस शब्द का उपयोग करने के लिए, वाह, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो खुद उस परंपरा में है, लेकिन दिवालिया शब्द का उपयोग करना, यह बहुत कठिन है, लेकिन यह सच है। शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद इस तरह समाप्त हो गया। अब, आज भी शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवादी हैं, और ईसाई शताब्दी अभी भी प्रकाशित हो रही है, लेकिन वहाँ बहुत अधिक सार नहीं है।

मैं इसे इसलिए पढ़ता हूँ क्योंकि, आप जानते हैं, मैं बस यह देखना चाहता हूँ कि क्या इसमें कुछ ऐसा है जिसका मैं उपयोग कर सकता हूँ, लेकिन इसमें बहुत ज़्यादा सार नहीं है। तो, यह उदार धर्मशास्त्र का उद्भव और विकास है। शायद मुझे इस व्याख्यान का शीर्षक बदलकर उदार धर्मशास्त्र का उद्भव और विकास और मृत्यु रखना चाहिए, क्योंकि यह मर चुका है।

यह खत्म हो चुका है। यह दिवालिया हो चुका है। इसलिए इसकी जगह लेने के लिए दूसरे आंदोलन होने चाहिए।

तो, ठीक है, मैं यहीं रुकता हूँ। श्लेयरमाकर से लेकर, हमने जिन तीन बड़े नामों का उल्लेख किया है, वे महत्वपूर्ण हैं। श्लेयरमाकर, रौशनबुश, वे इसमें कैसे फिट बैठते हैं, और एच. रिचर्ड नीबहर और उनकी आलोचना क्या थी।

लेकिन क्या आपके पास इस आंदोलन के बारे में कोई और सवाल है? जैसा कि मैंने कहा, आप आज भी इसके अवशेष देख सकते हैं। इसमें वह ताकत नहीं है जो 19वीं सदी या 20वीं सदी की शुरुआत में श्लेयरमेकर या कुछ शुरुआती आकार देने वालों के अधीन थी। लेकिन इस पर कुछ भी? क्या आप ठीक हैं? क्या आप समझते हैं कि हम यहाँ क्या कर रहे हैं? तो, धर्मशास्त्र के संदर्भ में पेंडुलम थोड़ा सा झूल गया है।

क्या आप सब तैयार हैं? ठीक है। अब, मैं यहाँ एक मिनट के लिए रुकता हूँ। तो अगले सोमवार के लिए व्याख्यान नोट्स का अंत हो गया।

तो, सोमवार को व्याख्यान 7 तक और उसमें शामिल व्याख्यान शामिल हैं। तो, इसमें चार शामिल हैं। मेरा मानना है कि यह चार से सात तक है। चार से सात तक।

चार, पाँच, छह, सात। इसमें उन चार व्याख्यानों और उन व्याख्यानों से संबंधित सभी पठन शामिल हैं। तो, हम इसके साथ ठीक हैं।

और फिर, बुधवार को, आप मुझे रीडिंग से कुछ प्रश्न लाकर दीजिए। शुक्रवार को, हम आपको परीक्षा के लिए तैयार करने के लिए एक और सत्र लेंगे। और शुक्रवार को मेरे पास परीक्षा होगी।

तो मैं यह सुनिश्चित कर पाऊंगा कि आप अपने सभी सवालों और हर चीज़ के साथ लक्ष्य पर हैं। और फिर हम चल पड़ेंगे। तो, हम लगभग नवंबर में हैं।

ठीक है। खैर, चलिए अगला व्याख्यान शुरू करते हैं - और व्याख्यान संख्या आठ।

यह 19वीं शताब्दी में इंजीलवाद का धर्मशास्त्र है। तो, आपको पृष्ठ 14 पर अपनी रूपरेखा मिल गई है, 19वीं शताब्दी में इंजीलवाद का धर्मशास्त्र। अब, मैंने सोचा, मैं इस व्याख्यान को कैसे पढ़ूंगा? मैं 19वीं शताब्दी में इंजीलवाद में क्या हो रहा है, यह कैसे समझूंगा? और वास्तव में, मैंने इसे पाठ्यक्रम में इंग्लैंड में जो कुछ हो रहा था, उसके माध्यम से इसे समझने का निर्णय लिया है।

19वीं सदी में इंग्लैंड में दो बहुत बड़े आंदोलन हुए थे जिन पर मैं व्याख्यान देने जा रहा हूँ। पहला आंदोलन ऑक्सफोर्ड आंदोलन कहलाता है। इसलिए, हम ऑक्सफोर्ड आंदोलन के बारे में बहुत कुछ बात करने जा रहे हैं।

यह बहुत महत्वपूर्ण है। यह वास्तव में चर्च और राज्य के साथ चर्च के रिश्ते पर केंद्रित था। मैंने इस व्याख्यान में साल्वेशन आर्मी पर भी व्याख्यान दिया।

अब, मैं बस इसके बारे में कुछ कहना चाहता हूँ, और फिर हम ऑक्सफोर्ड आंदोलन पर बात करेंगे। जैसा कि आप जानते होंगे, मैं एक आम आदमी के तौर पर साल्वेशन आर्मी से जुड़ा हुआ हूँ। हालाँकि, 19वीं सदी में ब्रिटेन में साल्वेशन आर्मी एक बहुत ही महत्वपूर्ण आंदोलन था।

और इसलिए मैंने फैसला किया है कि भले ही मेरी इसमें व्यक्तिगत रुचि है, फिर भी मुझे शायद आगे बढ़कर इस पर व्याख्यान देना चाहिए। मार्क नोल ने अपनी पुस्तक टर्निंग पॉइंट्स में याद किया है कि हमने शुक्रवार को क्या उल्लेख किया था, लेकिन पुस्तक टर्निंग पॉइंट्स में उन्होंने अन्य मोड़ दिए हैं जिन्हें वे चुन सकते थे लेकिन नहीं चुना। और उनमें से एक था साल्वेशन आर्मी।

वह साल्वेशन आर्मी को एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में चुन सकते थे क्योंकि यह था। इसलिए, मुझे उम्मीद है कि आप इसे स्वीकार करेंगे। मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि 19वीं सदी में इंजीलवाद था। ऑक्सफोर्ड आंदोलन एक उच्च-चर्च आंदोलन है, और साल्वेशन आर्मी एक निम्न-चर्च आंदोलन है।

इसलिए, मैंने दोनों आंदोलनों की तुलना और अंतर किया। अब, उन शब्दों से, मैं उन शब्दों का उपयोग नहीं करता। किसी के पास कोई विशेषाधिकार प्राप्त स्थान नहीं है।

मैं इन शब्दों का इस्तेमाल सिर्फ चर्च की समझ, चर्च को कैसे संगठित किया जाना चाहिए, इत्यादि के संदर्भ में कर रहा हूँ। ऑक्सफोर्ड मूवमेंट, बहुत ऊंचा चर्च। साल्वेशन आर्मी, चर्च की समझ के संदर्भ में सबसे नीचा चर्च, गरीबों की सेवा भी करता था।

तो अब हम यहीं पर आते हैं। तो ठीक है। चलिए सबसे पहले बात करते हैं, ए, ऑक्सफोर्ड मूवमेंट के बारे में, और चलिए ऑक्सफोर्ड मूवमेंट का परिचय देते हैं और बताते हैं कि ऑक्सफोर्ड मूवमेंट क्या है।

मुझे इसे बदलने दो ताकि हम इसे ऑक्सफोर्ड मूवमेंट के लिए रख सकें। ठीक है। उफ़।

ठीक है. हाँ. ठीक है.

अच्छा. ठीक है. परिचय.

ऑक्सफोर्ड मूवमेंट। ठीक है। आप ऑक्सफोर्ड मूवमेंट को पहचान सकते हैं, हम इंग्लैंड की बात कर रहे हैं।

यह कुछ ऐसा है जो ऑक्सफोर्ड में शुरू हुआ, यानी ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में, इसीलिए इसे ऑक्सफोर्ड मूवमेंट कहा गया। जब भी मैं ऑक्सफोर्ड मूवमेंट पर व्याख्यान देता हूँ, तो मैं ऑक्सफोर्ड मूवमेंट के लिए तीन शब्दों का इस्तेमाल करता हूँ। ठीक है।

नंबर एक, यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण आंदोलन था। मुझे यह शब्द पसंद है। बहुत महत्वपूर्ण आंदोलन।

इसमें कोई संदेह नहीं है। दूसरी बात, यह एक बहुत ही धार्मिक आंदोलन था। बहुत ही धार्मिक।

लोग वास्तव में ईसाई धर्म की प्रकृति और अन्य बातों को समझना चाहते हैं। यह एक गहरा धार्मिक आंदोलन है। ठीक है।

और तीसरा, यह एक जानबूझकर किया गया आत्म था; यह एक बहुत ही आत्म-चेतन आंदोलन था। अपने स्वयं के गठन और आकार के बारे में बहुत आत्म-चेतन। इसलिए मुझे ये शब्द पसंद हैं।

यह आंदोलन अत्यंत महत्वपूर्ण था। यह आंदोलन अत्यंत धार्मिक था। यह आंदोलन अत्यंत आत्म-चेतनापूर्ण था।

अब, हो सकता है कि आपको अभी तक इस आंदोलन के बारे में कुछ भी पता न हो, लेकिन मुझे उम्मीद है कि जब हम इस पर व्याख्यान देंगे, तो आप इसके बारे में जान जाएँगे। लेकिन परिचय के संदर्भ में बस उन तीन शब्दों को ध्यान में रखें। और जैसा कि मैंने बताया, यह आंदोलन ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में शुरू हुआ था।

तो यहीं से इसकी शुरुआत हुई और इसीलिए यह इतना महत्वपूर्ण था। ठीक है। परिचय के तौर पर एक और बात।

यह आंदोलन चर्च की समझ को वापस लाना चाहता था। अब, चर्च, हम बड़े अक्षर C का उपयोग करते हैं क्योंकि वे मसीह की दुल्हन, मसीह के शरीर के बारे में बात कर रहे हैं। वे जरूरी नहीं कि किसी संप्रदाय के बारे में बात कर रहे हों, हालांकि इसमें संप्रदायगत झुकाव होगा।

लेकिन वे संप्रदाय के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। चर्च के बारे में बात कर रहे हैं, नए नियम में मसीह का शरीर। ठीक है। यह आंदोलन एक ऐसा आंदोलन है जो मसीह के शरीर में चर्च को केवल एक दिव्य आंदोलन के रूप में देखना चाहता था।

ठीक है। यह केवल एक दिव्य आंदोलन है। एक ऐसा आंदोलन जिसे केवल ईश्वर ने आकार दिया है।

ठीक है। और उन्होंने यह कहाँ देखा? अब, याद रखें, यह आंदोलन, यह ऑक्सफोर्ड आंदोलन, 19वीं सदी का आंदोलन है। ठीक है।

वे इसे कहाँ देखते हैं? वे इसे नए नियम में देखते हैं। नए नियम में, वे अपनी बाइबल खोलते हैं, और वे नए नियम के चर्च, मसीह के शरीर को एक दिव्य, केवल एक दिव्य आंदोलन के रूप में देखते हैं। उन्होंने इसे शुरुआती चर्च में भी देखा।

तो, मान लीजिए चर्च के पहले 400 साल। अब, तब से, जहाँ तक उनका सवाल है, हम इसे उनके चश्मे से देखने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन तब से, राज्य द्वारा चर्च को नियंत्रित करने के प्रयास किए गए हैं। राज्य द्वारा चर्च को आकार देने, चर्च को चलाने, चर्च को संगठित करने और चर्च को नियंत्रित करने के प्रयास किए गए हैं।

और उन्होंने इसे रोम में देखा, लेकिन उन्होंने इसे सुधार के बाद से भी देखा। ओह, उन्होंने इसे मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक चर्च में देखा। उन्होंने इसे सुधार के बाद से देखा है, यहां तक कि प्रोटेस्टेंटवाद के भीतर भी।

उन्होंने चर्च को आकार देने के लिए राज्य के प्रयासों को देखा है और इसलिए, चर्च को एक तरह से दैवीय संस्था से कम और मानवीय संस्था से अधिक बनाया है। उन्होंने सरकारी कार्रवाई द्वारा चर्च को बदलने की कोशिश की, आप जानते हैं? इसलिए, जहाँ तक उनका सवाल है, यह न्यू टेस्टामेंट चर्च नहीं था। वे इंग्लैंड में रह रहे हैं।

ये लोग एंग्लिकन हैं। वे अपने चर्च को देख रहे हैं, और वे पूछ रहे हैं, क्या यह न्यू टेस्टामेंट चर्च है, या यह पहली चार शताब्दियों का चर्च है? उनका जवाब था, नहीं, ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि यह राज्य द्वारा बहुत अधिक नियंत्रित है। यह एक तरह का राज्य चर्च है।

इन लोगों के लिए, एक तरह से, इसमें अपनी पूर्ण दिव्यता का अभाव है। ठीक है? इसलिए, वे न्यू टेस्टामेंट चर्च और आरंभिक चर्च को अपने आदर्श के रूप में देखना शुरू करते हैं। यही उनका उदाहरण है।

यही उनका मॉडल है। यही उनकी दिलचस्पी है। ठीक है, तो चलिए अब इस पर एक मिनट के लिए विचार करते हैं।

वे इसी तरह से धर्मशास्त्रीय रूप से सोच रहे हैं। लेकिन 19वीं सदी में, वे एक आंदोलन में रह रहे हैं, और वे एक आंदोलन को आकार देने में मदद कर रहे हैं, लेकिन वे एक आंदोलन में भी रह रहे हैं। और हम आम तौर पर 19वीं सदी को क्या कहते हैं? रोमांटिकतावाद का युग।

रोमांटिकतावाद का युग। और ऐसी कौन सी चीज़ है जो व्यापक सांस्कृतिक तरीके से रोमांटिकतावाद की विशेषता है? व्यापक सांस्कृतिक तरीके से रोमांटिकतावाद की विशेषता वाली चीज़ों में से एक है अतीत की ओर देखना और अतीत को संस्कृति के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण मानना आदि। इसलिए, रोमांटिक लोग अक्सर ऐसे लोग होते थे, चाहे वे कवि हों या लेखक या संगीतकार, जो अतीत की ओर देखते थे और देखते थे कि अगर हम वास्तव में वही बनना चाहते हैं जो हमें बनना चाहिए तो हमें अतीत से जो सीखा है उसे अपनाना चाहिए आदि।

तो, ऐसा लगता है कि ये लोग अपनी संस्कृति, उस रोमांटिक युग के उत्पाद हैं जिसमें वे रह रहे हैं, लेकिन आप यह भी कह सकते हैं कि वे उस संस्कृति के निर्माता भी हैं। वे उस रोमांटिकतावाद के निर्माता भी हैं। तो, आप इसे देख सकते हैं, शायद इसे दोनों तरह से देख सकते हैं।

लेकिन धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से बहुत सी चीज़ें हो रही हैं जो इस आंदोलन को आकार दे रही हैं जिसे हम ऑक्सफोर्ड आंदोलन कहते हैं। ठीक है, यह कहने के बाद, हम अब लो को बेहतर ढंग से समझने की कोशिश करने जा रहे हैं। हम ऑक्सफोर्ड आंदोलन की शुरुआत, रोमन कैथोलिक चर्च की ओर कदम और एंग्लिकन चर्च की प्रतिक्रिया के बारे में बात करने जा रहे हैं।

तो, दो, तीन और चार। यह ऑक्सफोर्ड मूवमेंट की शुरुआत थी। हुआ यह कि, याद कीजिए हमने कहा था, यह कोर्स किस बारे में है? यह सही लोगों के बारे में है जो सही जगह पर हैं और जिनके पास सही विचार हैं।

और जो हुआ वह यह था कि 19वीं सदी की शुरुआत में, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में पादरी वर्ग का एक समूह इस बारे में चर्चा कर रहा था कि चर्च की प्रकृति कैसी होनी चाहिए। तो, वास्तव में, चर्च विज्ञान उनका मुख्य ध्यान था। तो, आपने इन लोगों को सही जगह पर इस बारे में बात करते हुए देखा।

वे जो लिख रहे थे और जिस बारे में बात कर रहे थे, उसमें वे एक-दूसरे का समर्थन करते थे और अंततः, कुछ ऐसा हुआ, और आपको ऑक्सफोर्ड मूवमेंट कहा जाने लगा। तो, ठीक है। अब, जब हम ऑक्सफोर्ड मूवमेंट के बारे में सोचते हैं, तो सबसे पहले हमारे दिमाग में ऑक्सफोर्ड में रिचर्ड फ्राउड नामक एक व्यक्ति आता है, फ्राउड।

तारीखों पर गौर करें, दिलचस्प तारीखें, 1803, 1836। वह व्यक्ति तब मर गया जब वह केवल 33 वर्ष का था। और फिर भी, वह उन व्यक्तियों में से एक है जो इस पूरी चीज़ को आगे बढ़ाता है, अपनी सोच से इस पूरी चीज़ को आगे बढ़ाता है।

अब, उनके लिए, चर्च, चर्च, आदर्श चर्च आदिम चर्च, आरंभिक चर्च, पहली चार शताब्दियों में न्यू टेस्टामेंट चर्च है। सुधार के बाद से चर्च में भ्रष्टाचार हुआ है। सुधार ने चर्च को भ्रष्ट कर दिया।

सुधार ने चर्च को कुछ ऐसा बना दिया जो वह कभी नहीं बनना चाहती थी। और हमें जो करना है वह है उस आदिम चर्च जीवन में वापस जाना। ठीक है।

इसलिए, वह उपदेश देते हैं, वह शिक्षा देते हैं, वह लिखते हैं, और वह एक पुनरुत्थान चाहते हैं। लेकिन यह उस तरह का पुनरुत्थान नहीं है जिसके बारे में आप चार्ल्स ग्रेडिसन फिन्नी या जॉर्ज व्हाइटफील्ड जैसे किसी व्यक्ति के बारे में सोचते हैं। वह उस तरह का पुनरुत्थान नहीं चाहते हैं।

वह प्रारंभिक चर्च का पुनरुद्धार चाहता है, और इसलिए वह तीन चीजों पर जोर देता है। अगर हम चर्च में इन तीन चीजों को अपना सकें, तो हम प्रारंभिक चर्च की तरह बन जाएंगे। हम उस चर्च की तरह बन जाएंगे जिसे परमेश्वर ने बनाया था।

ठीक है। नंबर एक। अब, उन्होंने अन्य चीजों के बारे में बात की।

मैं इन तीनों का इस्तेमाल सिर्फ संकेत के तौर पर कर रहा हूँ। ठीक है। आप समझे? तो, ठीक है।

नंबर एक, हमें उपवास पर वापस लौटना होगा। आरंभिक चर्च में उपवास किया जाता था। हमारे पास उपवास का वह अनुशासन नहीं है जो आरंभिक चर्च में था।

हमें उस पर वापस जाना होगा। नंबर दो। अब, याद रखें, वह अब एक एंग्लिकन के रूप में बात कर रहा है।

वह रोमन कैथोलिक नहीं है। दूसरी बात, हमें पादरी ब्रह्मचर्य की ओर लौटना होगा। सभी पादरी ब्रह्मचारी होने चाहिए।

उन्हें शादी नहीं करनी चाहिए। उन्हें बच्चे पैदा नहीं करने चाहिए और इसी तरह की अन्य बातें भी। हमें पादरी ब्रह्मचर्य की ओर लौटना होगा।

अब, यहाँ इस दूसरे बिंदु के अंतर्गत, वह यहाँ थोड़ा अलग था क्योंकि पादरी ब्रह्मचर्य वास्तव में उन पहली चार शताब्दियों का हिस्सा नहीं था। पादरी ब्रह्मचर्य 11वीं शताब्दी या उसके आसपास नहीं आता है, लेकिन वह इसी तरह से प्रारंभिक चर्च पादरी ब्रह्मचर्य की कल्पना करता है। और फिर, नंबर तीन, हमें संतों के प्रति श्रद्धा पर वापस जाना होगा।

संतों की पूजा नहीं बल्कि संतों के प्रति श्रद्धा। इसलिए, हमें प्रारंभिक चर्च के संतों का आदर करना होगा। और अगर हम इस तरह की चीजों पर वापस आ सकते हैं, अगर हम इस तरह के तरीकों से पुनरुद्धार प्राप्त कर सकते हैं, तो चर्च फिर से एक तरह से जीवंत हो जाएगा जैसा कि सुधार के बाद से नहीं हुआ है।

इसलिए, वह सुधार से परे देखता है। वह सुधार से लेकर उस शुरुआती चर्च तक देखता है, और कहता है, बेटा, अगर हम ऐसे बन सकते हैं, तो हम वास्तव में वह चर्च बन सकते हैं जिसे भगवान ने बनाया था। इसलिए, वह ऑक्सफोर्ड आंदोलन के प्रवक्ताओं में से एक है।

मैं तुम्हें दूसरा वाला देता हूँ। अब, मुझे तुम्हें यहाँ थोड़ा आराम देना है। मैंने आज अभी तक ऐसा नहीं किया है।

लेकिन मैं दूसरे का ज़िक्र करना चाहूँगा। हाँ। तो, रिचर्ड फ्रॉस्ट।

फ्राउड, मुझे लगता है। यह अच्छा है... हाँ, मैं नहीं हूँ... हाँ। ऐसा लगता है कि वह कैथोलिक था।

ठीक है। आप सही दिशा में लक्ष्य साध रहे हैं। वह अभी तक पूरी तरह कैथोलिक नहीं है।

वह अभी भी एक एंग्लिकन पादरी है, और वह अभी भी अपने दोस्तों के साथ इस बारे में बात कर रहा है। और आंदोलन वास्तव में कैथोलिक धर्म में बदल गया। यह कहानी के अंत में होने जा रही है।

लेकिन कैथोलिक धर्म में परिवर्तन से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु 1836 में हुई। इसलिए, वे इसके अंतिम परिणाम देखने के लिए जीवित नहीं रहे।

लेकिन यह मुझे और उसे सुनने वाले सभी लोगों को कैथोलिक लगता है। यह सच है। लेकिन, हाँ। रिचर्ड के बारे में कुछ और?

मुझे जॉन केबल का ज़िक्र करने दीजिए, और फिर मुझे आपको एक ब्रेक देना होगा। केबल, दूसरा। ओह, क्या मैंने... हाँ, वह वहाँ है।

जॉन केबल। 1866 तक जीवित रहे। तो, आप उन्हें एक कवि के रूप में जानते होंगे।

वह एक महान कवि और उपदेशक थे। अगर ऑक्सफोर्ड आंदोलन से जुड़ा कोई एक उपदेशक है, तो वह केबल है। है न? और केबल ने वास्तव में एक धर्मोपदेश दिया था।

मैं आपको बताता हूँ... मैंने धर्मोपदेश की तारीख नहीं लिखी। यहाँ तारीख है। 14 जुलाई, 1833।

14 जुलाई, 1833. धर्मोपदेश का शीर्षक था राष्ट्रीय धर्मत्याग. राष्ट्रीय धर्मत्याग.

14 जुलाई, 1833. उन्होंने इसका प्रचार किया... मुझे लगता है कि यह ऑक्सफोर्ड में सेंट मैरी था, लेकिन उन्होंने ऑक्सफोर्ड के एक चर्च में इसका प्रचार किया। और वह उपदेश वास्तव में एक तरह का वाटरशेड उपदेश था क्योंकि उस उपदेश में, वह जो करना चाहता था वह चर्च, कैपिटल सी के साथ चर्च, मसीह के शरीर को किसी भी तरह के राज्य या राष्ट्रीय नियंत्रण से अलग करना था।

हमें इससे बाहर निकलना होगा। आप जानते हैं, हमें उस आदिम चर्च की तरह बनना होगा जो किसी राष्ट्रीय या राज्य नियंत्रण के अधीन नहीं था। इसलिए, वह राष्ट्रीय धर्मत्याग पर उपदेश देता है।

लेकिन जब वे अपने सिद्धांतों को तैयार करते हैं, तो यह दिलचस्प है कि वे यूचरिस्ट के बारे में बहुत कुछ बोलते हैं। इसलिए, इस उपदेश में नहीं, बल्कि अन्य उपदेशों और अन्य तरीकों से, वे यूचरिस्ट के बारे में बात करते हैं। मैं सिर्फ़ दो बातें बताना चाहता हूँ जो वे यूचरिस्ट के बारे में कहते हैं।

देखें कि क्या यह प्रोटेस्टेंट लगता है, या देखें कि क्या यह कैथोलिक लगता है। देखें कि क्या यह लूथर या कैल्विन जैसा लगता है, या क्या यह सेंट ऑगस्टीन या पहली चार शताब्दियों के कुछ इसी तरह का लगता है? ठीक है, मैं दो बातें बताना चाहता हूँ।

नंबर एक वह तरीका है जिससे आप बच सकते हैं। जिस तरह से आप बच सकते हैं वह यूचरिस्ट में मसीह के शरीर और रक्त को ग्रहण करने के माध्यम से है। तो, जहाँ तक उनका सवाल है, यही वह तरीका है जिससे आपको मुक्ति मिलती है क्योंकि वह मसीह का शरीर और रक्त है। अब, क्या यह ज़्यादा कैथोलिक लगता है, या ज़्यादा प्रोटेस्टेंट? यह ज़्यादा कैथोलिक लगता है, बेशक, क्योंकि जहाँ तक उनका सवाल है, यह शुरुआती चर्च की शिक्षा थी, और हमें उस शिक्षा पर वापस जाने की ज़रूरत है।

तो, मुक्ति यूचरिस्ट के माध्यम से आती है, और यूचरिस्ट उसके लिए मसीह का शरीर और रक्त है। तो यह नंबर एक है। नंबर दो, यूचरिस्ट वैध रूप से केवल उन पुजारियों के माध्यम से प्रशासित किया जाता है जो पीटर के बाद से प्रेरित उत्तराधिकार में हैं।

तो, पीटर के बाद से एक प्रेरितिक उत्तराधिकार है। केवल वही पुजारी जो उस प्रेरितिक उत्तराधिकार में हैं, वे ही यूचरिस्ट दे सकते हैं। अब, क्या यह ज़्यादा कैथोलिक लगता है, या ज़्यादा प्रोटेस्टेंट? यह मुझे काफ़ी कैथोलिक लगता है।

वैसे भी, खास तौर पर अगर आप पीटर के समय में वापस जा रहे हैं, तो आपके पास यह प्रेरितिक उत्तराधिकार है, और केवल उन्हीं पुजारियों को यूचरिस्ट देने की अनुमति है। तो यह सुधार जैसा नहीं लगता। यह काफ़ी कैथोलिक लगता है।

तो केवल एक महान उपदेशक, महान कवि, महान लेखक और बहुत प्रभावशाली व्यक्ति थे। एक बार जब वह इस आंदोलन के बारे में बात करना शुरू करते हैं, तो वह वास्तव में कैथोलिक शब्दों, कैथोलिक शब्दावली में बात करना शुरू करते हैं। यूचरिस्ट, ट्रांसबस्टैंटिएशन, शरीर, रक्त, अपोस्टोलिक उत्तराधिकार।

यह सब शुरुआती चर्च से ही चर्चा में है। इसलिए केवल बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए पहले दो लोग वास्तव में महत्वपूर्ण हैं।

तीसरा आदमी, अनंत, अच्छा, तीसरा आदमी, बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन मुझे तुम्हें एक ब्रेक देना होगा। थोड़ा ब्रेक लो। आज हमें ब्रेक नहीं मिला, है न? भगवान तुम्हारा भला करे।

आज सोमवार है। सेमेस्टर का दूसरा भाग चल रहा है। हम जीवन में आगे बढ़ रहे हैं, है न? हम आगे बढ़ रहे हैं।

तो, क्या आपके पास यहाँ ब्रेक लेते समय कोई सवाल है? स्ट्रेच, ब्रेक, आशा। हाँ। वह अभी तक पोप के रूप में पीटर के बारे में बात नहीं कर रहा है।

वह, वे अंततः ऐसा करेंगे क्योंकि वे कैथोलिक बनने जा रहे हैं। लेकिन पीटर के माध्यम से, वह चर्च का पहला बिशप था। और जैसा कि उसने बिशपों को नियुक्त और अभिषिक्त किया, प्रेरितिक उत्तराधिकार चर्च के बिशपों के माध्यम से है।

इसलिए, केवल चर्च के बिशप ही कम्युनियन दे सकते हैं। और जब वे फिर मंत्रियों को नियुक्त करते हैं, तो वे देते हैं, या पुजारियों को नियुक्त करते हैं, मुझे शायद यह कहना चाहिए, लेकिन जब वे पुजारियों को नियुक्त करते हैं, तो वे पुजारियों को यूचरिस्ट और सब कुछ देने की शक्ति देते हैं। लेकिन यह आम लोगों द्वारा नहीं दिया जा सकता है।

यह अन्य संप्रदायों के मंत्रियों द्वारा नहीं दिया जा सकता। वहाँ प्रेस्बिटेरियन थे, और उसके चारों ओर बैपटिस्ट थे। चारों ओर प्रेस्बिटेरियन थे।

उन्होंने इसे बिल्कुल भी मान्यता नहीं दी क्योंकि आसपास मेथोडिस्ट थे। वह इसे वैध, वैध यूचरिस्ट के रूप में मान्यता नहीं देते। यह केवल उन लोगों के लिए है जिन्हें प्रेरितिक उत्तराधिकार दिया गया है, जो वास्तव में मसीह का शरीर और रक्त है।

तो, जब हम यहाँ एक मिनट के लिए रुके थे, तो कुछ और भी था। ठीक है। चलिए फिर नंबर तीन पर नज़र डालते हैं, और फिर मैं आपको जाने देता हूँ।

नंबर तीन, पूरे आंदोलन में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति। और उसका नाम है जॉन हेनरी न्यूमैन। और यहाँ उसकी तिथियाँ हैं: 1801 से 1890 तक।

ऐसे बहुत से अन्य लोग और अन्य लोग थे जिनका हम उल्लेख कर सकते थे। मैं सिर्फ़ इन तीन लोगों को चुन रहा हूँ, लेकिन अन्य लोग वास्तव में, वह उन सभी में सबसे महत्वपूर्ण है। ठीक है।

जॉन हेनरी न्यूमैन, एक बौद्धिक महाशक्ति। मुझे लगता है कि अन्य लोग भी थे, लेकिन एक बौद्धिक महाशक्ति, इसमें कोई संदेह नहीं है। दिलचस्प बात यह है कि एंग्लिकन चर्च में पुजारी के रूप में अपने शुरुआती दिनों में, वह खुद को एक इंजीलवादी मानते थे।

तो, वह इवेंजेलिकल शब्द का इस्तेमाल ठीक वैसे ही करता होगा जैसे वेस्ले ने पिछली सदी में इवेंजेलिकल शब्द का इस्तेमाल किया था। लेकिन वह खुद को इवेंजेलिकल मानता था। यह एक महत्वपूर्ण छोटी सी बात है।

अब, न्यूमैन जो करने जा रहा है, वह यह है कि, क्षमा करें, मुझे लगा कि मेरे पास यहाँ वह शब्द है। मुझे बस एक शब्द ढूँढ़ना है। क्या मैंने नहीं ढूँढ़ा? ठीक है।

खैर, भगवान मेरा भला करे। मैंने यह शब्द नहीं लिखा। ठीक है।

ठीक है। मैं जी रहा हूँ और सीख रहा हूँ। तो, हम बस एक मिनट के लिए पीछे चलते हैं।

ठीक है। न्यूमैन ने जो करना शुरू किया, वह लिखना था। और लोगों को प्रभावित करने के लिए, वह उपदेश देकर और लिखकर उन्हें प्रभावित करना चाहता था।

तो, उन्होंने ट्रैक्ट्स फॉर द टाइम्स, ट्रैक्ट्स नामक एक प्रकाशन शुरू किया। ट्रैक्ट्स फॉर द टाइम्स, ट्रैक्ट्स। मुझे इसे पावरपॉइंट में डालना है।

ट्रैक्ट्स फॉर द टाइम्स। उन्होंने 1833 में इसकी शुरुआत की। यह 1833 में आंदोलन की शुरुआत थी।

ठीक है। अब, जब आप ट्रैक्ट शब्द के बारे में सोचते हैं, तो आप क्या सोचते हैं? कोई आपको रेलवे स्टेशन या किसी और जगह पर एक ट्रैक्ट देता है; आप इसके बारे में क्या सोचते हैं? दो पेज, तीन पेज, काफी पठनीय, और इसी तरह। ये ग्रंथ जैसे थे।

तो, ये ट्रैक्ट नहीं थे, बस, आप जानते हैं, दो पेज या कुछ और। ये ऐसे ग्रंथ थे जो लिखे गए थे - टाइम्स के लिए ट्रैक्ट।

ये धर्मशास्त्र के बारे में गंभीर लेख थे। और 1833 में, उन्होंने ट्रैक्ट्स फॉर द टाइम्स नाम से इन चीजों को प्रकाशित करना शुरू किया। तो, ठीक है।

ऐसा होता है कि जैसे-जैसे वह प्रकाशित होता है, और जैसा कि आप टाइम्स के लिए ट्रैक्ट्स का अनुसरण करते हैं, न्यूमैन खुद अधिक से अधिक कैथोलिक होता जा रहा है। वह कम एंग्लिकन लग रहा है, और वह निश्चित रूप से कम इंजीलवादी लग रहा है, और वह अधिक से अधिक कैथोलिक लग रहा है। और इसलिए उसने ईसाई चर्च को देखना शुरू कर दिया।

उसने ईसाई चर्च को देखना शुरू किया। सबसे पहले, आप जानते हैं, मुझे लगता है कि मेरे पास यह है। मेरे पास यह है।

ठीक है। भगवान मुझे आशीर्वाद दे। हम यहाँ हैं।

मुझे बस यह स्लाइड डालनी है। ठीक है। टाइम्स के लिए ट्रैक्ट हैं।

ठीक है। उन्होंने लिखना शुरू किया तो शुरू हो गया। उन्होंने एंग्लिकन चर्च को महान माध्यम, महान मध्य मार्ग के रूप में देखा। मुझे एहसास ही नहीं हुआ कि यह दस साल बाद हुआ।

मुझे आप लोगों को जाने देना होगा। मैं इसे बुधवार को उठाऊंगा।

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह सत्र संख्या 16 है, उदारवाद के प्रति प्रतिक्रिया।